"कृषक का सम्मान–देश का सम्मान"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 19, अंक : 1 (जनवरी–मार्च, 2024)

कुलपति संदेश

प्रदेश के मध्यम एवं लघु कृषकों के लिए कृषि एवं इससे सम्बन्धित व्यवसाय जीविकोपार्जन में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। गत वर्ष पूरे विश्व में "अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष" मनाया गया। बदलते पर्यावरण की स्थिति में इन अनाजों की वर्षा आधारित खेती, कम उत्पादन लागत, न्यूनतम उर्वरक व कीटनाशक रसायनों की आवश्यकता तथा उच्च पोषण मान के चलते इन्हें और भी प्रासंगिक बना देता है। श्री अन्न के अनेक मूल्यर्धित उत्पाद जैसे मल्टीग्रेन आटा, बिस्किट, केक, लड्डू, सेवई, पापड़, नमकीन, पास्ता, मोमोज, पौष्टिक पेय पदार्थ आदि बनाये जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर कृषक स्वरोजगार और फलतः अपनी आमदनी में कई गुना तक वृद्धि कर सकते हैं। इन फसलों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा अनेक कदम उठाये गये हैं, जिनमें प्रशिक्षण, क्लस्टर मिलेट्स प्रदर्शन, एफ.पी.ओ. व प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना, मिनीकिट वितरण, संचार माध्यमों के जरिये प्रचार–प्रसार व लोगों में जागरूकता पैदा करने जैसी गतिविधियां शामिल हैं। विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयाँ एवं कृषि विज्ञान केन्द्र अपने विभिन्न कृषि प्रसार गतिविधियों के माध्यम से उन्नत कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्र के कृषकों तक पहुँचा कर उनके आजीविका सुधार हेतु अथक परिश्रम करते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्राकृतिक खेती, जैविक खेती व अन्य अनेक आय वृद्धि जनित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। आज आवश्यकता है कि ऐसे कार्यक्रम जनपद के ज्यादा से ज्यादा ग्रामों में आयोजित किये जायें, जिसे युवा अपनाकर स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बने और उनका पलायन भी रूके।

मुझे यह उल्लेखित करते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा "पंत प्रसार संदेश" नामक पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें अनेक कृषकोपयोगी जानकारी, आगामी त्रैमास के समसामयिक कृषि कार्यक्रम आदि समावेशित होते हैं। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय को बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका रेखीय विभागों के प्रसार कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन एवं कृषकों हेतु स्वरोजगार की राह दिखाने में पथप्रदर्शक की भूमिका निभायेगी।

(मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतवर्ष में कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में दोगुनी से अधिक वृद्धि हुई और देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ है। सीमान्त, लघु और विशेषकर उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के कृषक इस विकास प्रक्रिया से भली भांति जुड़ नहीं पाते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि इन कृषकों की आवश्यकतानुसार कृषि तकनीकें विकसित की जाएं। इसी के दृश्टिगत कृषि जनित सभी व्यवसायों में कुशल प्रबन्धन, समन्वित फसल प्रणाली, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती तथा उन्नत बीजों एवं तकनीकों के समेकित प्रयोग पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में, जहाँ एक ओर जोत बिखरी एवं कृषि वर्षाश्रित है, वहीं दूसरी ओर यहाँ उन्नत कृषि तकनीकों का अभाव भी है। अतः यहाँ के कृषकों को आत्मनिर्भर बनाना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह सर्वविदित है कि गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के अथक प्रयास द्वारा कृषकों की आजीविका में सुधार लाने हेतु सतत् प्रयत्नशील है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषकोपयोगी त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका जहाँ एक ओर कृषि कार्य संचालन में प्रभावी भूमिका निभायेगी, वहीं दूसरी ओर कृषकों की आजीविका वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के आगामी अंक जनवरी–मार्च, 2024 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डा0 ओ0पी0एस0 नेगी)
कुलपति
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

भारत एक कृशि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 65 प्रतिषत आबादी गांवों में रहती है, जो अधिकांशतः कृषि पर निर्भर हैं। कृषक बन्धु सदियों से कृषि, उद्यान एवं कृषि के अन्य घटकों को अपनाकर कृषि विविधीकरण के विभिन्न आयामों को अपनाते हुए अपना जीविकोपार्जन करते आ रहे हैं। वर्तमान में उद्यान, सब्जी उत्पादन एवं इनके मूल्यवर्धित उत्पादों से सम्बन्धित अनेक तकनीक विकसित की गयी है, जिससे कृषकों की आय में त्वरित वृद्धि की जा सकती है। उत्तराखण्ड के दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में नवीन विकसित तकनीकियों को कृषकों के मध्य प्रसारित करने की अपार सम्भावनायें हैं। कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा कृषि आधारित परीक्षणों एवं प्रदर्शनों का आयोजन किया जाता है। इनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर कृषकोपयोगी तकनीकें विकसित की जाती हैं, जो कृषकों के आवश्यकता के अनुरूप एवं कम लागत की होती हैं। इन नवीनतम विकसित कृषि तकनीकों को सुदूर अंतिम पायदान पर बैठे कृषक तक ले जाकर कृषकों की आय में वृद्धि की जा सकती है। इसी क्रम में, लघु एवं मध्यम किसानों के लिए कृषि के कुछ उद्यम जैसे नर्सरी प्रबन्धन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती व दुग्ध उत्पादन आदि विकल्प हैं, जिसकी जानकारी कृषकों तक पहुँचाने के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के मार्गदर्शन में विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र पूरी लगन से काम कर रहे हैं। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा "पंत प्रसार संदेश" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि आधारित प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी साबित होगी।

(डा0 सुरेश के0 मल्होत्रा)
कुलपति
महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल (हरियाणा)

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : अप्रैल–जून

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : फसल पकने पर यथासमय कटाई व गहाई कर लें।

चना, मटर, मसूर, उर्द एवं मूंग : चना, मटर एवं मसूर की तैयार फसल की कटाई कर लें। विलम्ब से बोयी गयी चने की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति अनुसार कीटनाशी रसायन का छिड़काव करें।

गन्ना : बसन्तकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। शरदकालीन गन्ने एवं पेड़ी फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : घाटियों में बोयी गयी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। तैयार फसल की कटाई कर लें। मध्य एवं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में असिंचित फसल में 2 प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

धान : माह के प्रथम पखवाड़े तक चेतकी धान की बुवाई पूर्ण कर लें। पिछले माह बोयी गयी फसल में जमाव के 20–25 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का प्रयोग करें।

लहसुन, पालक, मेथी, धनियाँ : लहसुन की खुदाई करें। तीन दिन तक खेत में ही रहने दें। बाद में छाया में सुखाने की व्यवस्था करें तथा भण्डारण करें।

भिण्डी, लोबिया, राजमा : तैयार फलियों को तोड़कर विपणन की व्यवस्था करें। यदि फसलें बीज वाली हैं तो तैयार फलियों को तोड़कर सुखायें व बीज निकालें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

टमाटर व बैंगन, शिमला मिर्च : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। घाटी में तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग की सिंचाई करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स 0.8 प्रतिशत का छिड़काव करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

लीची : बाग की 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब और नाशपाती : पौधशाला में जमे नए पौधों की सिंचाई करें। बाग में जिंक सल्फेट व बोरेक्स का छिड़काव करें। अधिक फले पेड़ों में फलों की छंटाई 25 प्रति नाली के हिसाब से करें।

आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा, बादाम : जिंक सल्फेट और बोरेक्स का छिड़काव करें। बाग की चिड़ियों से रक्षा करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फसल

सूरजमुखी : फसल में दाना पड़ते समय सिंचाई करें। तोते आदि पक्षियों से परिपक्व फसल की सुरक्षा करें। फसल में बिहार बालदार सूँड़ी तथा जैसिड्स का प्रकोप होने पर संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।

धान : मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह में डाल दें। फसल से अच्छा उत्पादन लेने हेतु उन्नत प्रजातियों का चयन व संस्तुत सस्य क्रियायें अपनायें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों की समय पर कटाई कर लें एवं सूखने पर गहाई कर उपज को अच्छी तरह भण्डारित कर लें।

झंगोरा (मादिरा/साँवा) : अधिक उत्पादन लेने हेतु उन्नतशील प्रजातियों का चयन करें, जिनकी बुवाई ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के प्रथम पखवाड़े तथा मध्यम व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।

धान : मध्यम ऊँचे क्षेत्रों में सिंचित दशा (तलाऊँ) में रोपाई हेतु धान की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं घाटियों व कम ऊँचे क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में रखें।

मई : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

फूल गोभी, पात गोभी, गांठ गोभी, मूली, गाजर व शलजम : बीज वाली फसलों के कटाई का काम पूरा करें। बीज की सफाई करें और इतना सुखाये की नमी 8 प्रतिशत से ज्यादा न हो।

प्याज : यदि आवश्यक हो तो एक हल्की सी सिंचाई करें। आखिरी सप्ताह में पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दे इससे गांठे सख्त हो जाती है।

लहसुन : अतिशीघ्र खुदाई करें। दो दिन तक खेत में सूखने दें बाद में छोटे–छोटे बण्डल बनाकर नमी रहित स्थान पर 10 दिन तक सुखायें तथा भण्डारण करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा रोग के लक्षण दिखें तो संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल कमजोर दिखाई दे तो 50 कि.ग्रा./है. यूरिया खड़ी फसल में डालें।

टमाटर व बैंगन : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : नए बाग लगाने के लिये रेखांकन करके गड्ढे खोदें व बोरेक्स का छिड़काव करें।

केला : सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। अंवाछित पत्तियों को निकालें, नये बाग लगाने के लिए गड्ढ़े खोदे।

नीबूवर्गीय फल : नये बाग लगाने के लिए रेखांकन करके गडढ़े खोद लें। बाग में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : जिन स्थानों पर सिंचाई की सुविधा हो, उन बागों की सिंचाई करें। पत्ती खाने वाले कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू व खुबानी : फलों की चिड़ियाँ व अन्य जंगली जानवरों से रक्षा करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

जून : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : मध्यम शीघ्र एवं शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं सुगन्धित धान की दूसरे पखवाड़े में डालें। उचित सस्य क्रियायें अपनाकर स्वस्थ नर्सरी तैयार करें एवं पौध

21–25 दिन की होने पर रोपाई कर लें।

मक्का : फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में कर लें। बुवाई हेतु उपयुक्त संकर/संकुल प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई की विधि, उर्वरकों व खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग तथा अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति के अनुसार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, काकुन (कौणी) व रामदाना (चुआ/चौलाई/मारसा) : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई प्रथम पखवाड़े में करें। अधिक उत्पादन हेतु संस्तुत प्रजातियों का प्रयोग करें। गत माह में बोयी गयी फसलों में विरलीकरण, निराई–गुड़ाई, खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग एवं वर्षा के पश्चात् नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग संस्तुति अनुसार करें।

सोयाबीन : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें।

धान : जेठी धान की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें। प्रजाति का चुनाव, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई, उर्वरकों का प्रयोग व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

जून : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

बैंगन : फसल से तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल से बीज निकालें। जुलाई–अगस्त में रोपाई हेतु पौधशाला में बीज 1000–1200 ग्राम/है. की दर से डालें।

भिण्डी, लोबिया तथा राजमा : भिण्डी के तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। मई माह में बुवाई की गयी भिण्डी, लोबिया व राजमा में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। पकी हुई मिर्च को तोड़कर सुखायें तथा बीज निकालें। वर्शा ऋतु की फसल के लिए 1000–1500 ग्राम बीज/है. की दर से पौधशाला तैयार करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। झुलसा के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल में 50 किलोग्राम यूरिया/है. डालें।

टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, भिण्डी, लोबिया : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। कीट रोग दिखते ही संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जून : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : बाग की सफाई करें। नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई का कार्य पूर्ण करें। मध्यम समय में परिपक्व होने वाली किस्मों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में कलम बांधे एवं इसके लिए चीरा अथवा स्फान कलम विधि का प्रयोग करें।

नीबूवर्गीय फल : नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई करें। जल निकास की नालियों की सफाई करें। फलदार पेड़ों में नत्रजन व पोटाश की दूसरी मात्रा का प्रयोग करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा, खुबानी : बाग में जल निकास की व्यवस्था करें। बाग में जल निकास की नालियाँ बना लें। तैयार फलों की समय पर तुड़ाई कर विपणन करें।

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

विश्वविद्यालय द्वारा 115वाँ अखिल भारतीय किसान मेला का आयोजन मार्च 09–12, 2024 को किया गया। मेले के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल–महाराष्ट्र एवं पूर्व मुख्यमंत्री–उत्तराखण्ड, श्री भगत सिंह कोश्यारी जी ने उपस्थित

मेले का उद्घाटन करते मुख्य अतिथि श्री भगत सिंह कोश्यारी

जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि पंत विश्वविद्यालय का खाद्यान्न सुरक्षा में बड़ा योगदान है। एक समय था जब भारतीय अमेरिका के दोयम दर्जे के पी.एल. 480 गेहूँ का उपयोग करते थे, परन्तु साठ के दशक में हरित क्रान्ति का आगमन हुआ और धीरे–धीरे हम खाद्यान्न में आत्म निर्भर हुए। आपने वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए इन्हें ऋषि की संज्ञा देते हुए कहा कि ऋषि अर्थात वैज्ञानिक जिनके बिना कृषि सम्भव नहीं है। इसी क्रम में मेले के प्रथम दिन महिला सशक्तिकरण विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं का कृषि में योगदान, पर्वतीय कृषि में इनके महत्व, महिलाओं हेतु रोल मॉडल बनी अनेक ख्याति प्राप्त महिलाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड कृषि आयोग के उपाध्यक्ष श्री राजपाल सिंह एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के कुलपति डा0 ओ0पी0एस0 नेगी ने भी अपने अमूल्य विचार रखें। कार्यक्रम के अन्त में कृषि के क्षेत्र में अतुल्यनीय कार्य कर रहीं महिला उद्यमियों को सम्मानित भी किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 350 से भी अधिक फसलों की प्रजातियों के विकास सहित इस वर्ष दलहन की सात प्रजातियां विकसित की है, जो किसानों तक पहुँचायी जा रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के बारे में चर्चा करते हुए आपने कहा कि पहले मंडुवा, झंगोरा, कोदो आदि को गरीबों का भोजन कहा जाता था। परन्तु आज यह सिद्ध हो चुका है कि इनके सेवन से मधुमेह, रक्तचाप व अनेक अन्य खतरनाक रोगों से बचा जा सकता है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा ने बताया कि मेले में महत्वपूर्ण संस्थानों व कम्पनियों द्वारा विभिन्न विधाओं पर 375 बड़े व छोटे स्टॉल लगाकर बीज, कृषि ऋण, कृषि सुरक्षा, कृषि निवेश आदि की जानकारी प्रदान जा रही है। मेले में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा नवीनतम प्रजातियों के बीज व पौधों की बिक्री, शाक–भाजी की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, संकर बछियों की नीलामी, कृषि गोष्ठी आदि का आयोजन निर्धारित है। मेले के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने विश्वविद्यालय के गौरवशाली इतिहास को बनाये रखने हेतु वैज्ञानिकों से कठिन परिश्रम एवं कृषकों से पंतनगर बीज का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग कर उपज बढ़ाने का सलाह दिया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 19वीं बैठक का आयोजन जनवरी 05, 2024 को किया गया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौ, विश्वविद्यालय पन्तनगर ने कहा कि विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित मंडुआ एवं गहत के उन्नत प्रजातियों के वृहद स्तर पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन संचालित किये जायें। डा. संजय चौधरी, संयुक्त

निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा अंगीकृत ग्रामों में बैकयार्ड मुर्गी पालन को प्रोत्साहन देने का सुझाव दिया गया। बैठक में प्रभारी अधिकारी द्वारा वर्ष 2023 की प्रगति आख्या एवं 2024 की आगामी कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं रेखीय विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्यों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

- विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग, अल्मोड़ा में आयोजित किसान मेला फरवरी 29, 2024 में केन्द्र की गतिविधियों का प्रदर्शन स्टाल के माध्यम से किया गया। स्टाल से छप्पन कद्दू, लौकी, तुरई, करेला आदि के पौधों की बिक्री की गयी।
- प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत दो जागरूकता कार्यक्रम एवं तीन कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अंगीकृत ग्रामों में किया गया, जिसमें कृषकों को प्राकृतिक खेती की महत्ता एवं प्राकृतिक खेती से होने वाले मृदा एवं उत्पादों की गुणवत्ता को बनाये रखने के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।
- पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा गुणवत्तायुक्त सब्जी उत्पादन में सुनियोजित खेती का महत्व विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम मार्च 31, 2024 को किया गया। इस कार्यक्रम में पंतनगर से आये वैज्ञानिकों द्वारा सब्जी उत्पादन सम्बन्धी अनेक तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी, डा. एस. एस. सिंह एवं डा. राकेश मेर द्वारा भी इसमें प्रतिभाग किया गया।

प्रशिक्षण–गुणवत्तायुक्त सब्जी उत्पादन में सुनियोजित खेती का महत्व

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 19वी बैठक का आयोजन दिनांक 29.01.2024 को किया गया। बैठक में प्रभारी अधिकारी द्वारा वर्ष 2023 की प्रगति आख्या एवं वर्ष 2024 के कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण किया गया। अध्यक्षीय सम्बोधन में डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा ने विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में होने वाली परम्परागत फसल एवं सब्जियों के प्रदर्शन और प्रोत्साहन देने का सलाह दिया। आपने यह भी कहा कि केन्द्र की कार्ययोजना जनपद की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। इस बैठक में केन्द्र के वैज्ञानिकगण, रेखीय विभाग के अधिकारी, प्रगतिशील कृषक एवं पंतनगर विश्वविद्यालय से आये वैज्ञानिकगण भी अपने विचार रखें।
- केन्द्र द्वारा दिनांक 14.03.2024 को देवभूमि उद्यमिता योजना के अन्तर्गत राजकीय महाविद्यालय, तलवाड़ी, जनपद–चमोली के छात्र–छात्राओं का केन्द्र पर भ्रमण कराया गया। भ्रमण के दौरान विशेषज्ञों द्वारा छात्रों को कृषि से सम्बन्धित उद्यमिता विकास के बारे में जानकारी दी गयी।
- कृषि विभाग के सहयोग से केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण–प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों द्वारा कृषि की नवीनतम विकसित विधाओं के बारे में जानकारी व प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण कराया गया। ग्रामीण वेग वृद्धि परियोजना 'रीप' के सहयोग से केन्द्र में दिनांक 12–14 फरवरी 2024 को मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कृषकों को मशरूम उत्पादन, मूल्यवर्धन इत्यादि की तकनीकी जानकारी दी गयी।
- सशस्त्र सीमा बल, ग्वालदम के सहयोग से केन्द्र पर सुरक्षा बल कार्मिकों हेतु ''मियावाकी वृक्षारोपण तकनीक'' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें भूमि तथा वृक्षों का चुनाव, वृक्षारोपण की देखभाल तथा पर्यावरण को होने वाले लाभ के बारे में जानकारी देने के साथ–साथ मियावाकी तकनीक से वृक्षारोपण अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में सशस्त्र सीमा बल, ग्वालदम के साथ–साथ वर्चुअल मोड में सीमान्त मुख्यालय के अनेक अधिकारी व कार्मिक शामिल हुए।

वृक्षारोपण अभियान

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा प्राकृतिक खेती कार्यक्रम के अन्तर्गत दो प्रशिक्षण कृषकों हेतु एवं दो प्रशिक्षण जवाहर नवोदय विद्यालय, चम्पावत के छात्रों हेतु आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों से कुल 257 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।
- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 27वीं बैठक का आयोजन फरवरी 08, 2024 को डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में वर्ष 2023 के प्रसार कार्यक्रमों की प्रगति आख्या तथा वर्ष 2024 के कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा किया गया। कार्यक्रम में रेखीय विभाग के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कृषक सदस्यों द्वारा भाग लिया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा जनपद की आवश्यकता के अनुरूप प्रसार कार्यक्रमों का संचालन एवं विशेषकर पॉलीहाउस में बेमौसमी सब्जी उत्पादन कर आय बढ़ाने का सलाह दिया। बैठक में पंतनगर से आये अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भी उन्नत कृषि हेतु बहुमूल्य सुझाव दिये।
- केन्द्र द्वारा किसान विकास क्लब एवं उत्तराखण्ड जैव प्रौद्योगिकी परिषद, हल्दी पंतनगर के सहयोग से मूल्य संवर्धन विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त दो अन्य गोष्ठी का आयोजन कर प्रतिभागियों को तकनीकी जानकारी व विभिन्न सब्जियों के पौधें व बीज उपलब्ध कराये गये।

पशुचिकित्सा शिविर कार्यक्रम

- केन्द्र द्वारा पशुचिकित्सा शिविर एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं पंतनगर से आये अन्य वैज्ञानिकों द्वारा पशुपालन सम्बन्धी अनेक तकनीकी जानकारी दी गयी। शिविर के दौरान भा.कृ.अ.प. कैरी, इज्जतनगर (बरेली) द्वारा चूजों का निःशुल्क वितरण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा कृषकों हेतु चौदह प्रशिक्षण, प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु सात प्रशिक्षण एवं प्राकृतिक खेती विस्तार विषयक दो प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों से कुल 653 प्रतिभागी लाभान्वित हुए। इसी क्रम में, एफ.पी.ओ. परियोजना के अंतर्गत चार प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 155 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत 6.0 हैक्टेयर में गेंहूँ, 10 हैक्टेयर में सरसों, 5.0 हैक्टेयर में मसूर तथा 3.0 हैक्टेयर में दलहन चारा उत्पादन विषयक प्रदर्शन आयोजित किये गये। सब्जी मटर, हरी मिर्च एव ब्रोकली के 12.50 हैक्टेयर तथा बैकयार्ड कुक्कुट पालन में 25 कृषकों के यहाँ प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।
- पोषक तत्वों के प्रयोग से पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादकता एवम जनन तंत्र में वृद्धि हेतु 30 तथा बकरियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु 40 एवं गुणवत्तायुक्त संतुलित आहार के द्वारा दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु 30 प्रक्षेत्र प्रदर्शन अयोजित किये गये।

भिण्डी के रेषे से बनी सजावटी सामग्री

- राजभवन, देहरादून में आयोजित "बसंतोत्सव" कार्यक्रम, मार्च 1–3, 2024 में केन्द द्वारा प्रतिभाग कर प्रसार गतिविधियों का प्रदर्शन, तकनीकी मॉड्यूल एवं विधि प्रदर्शन द्वारा विकसित तकनीकों को दिखलाया गया।
- केन्द्र द्वारा भिण्डी के फाइबर (रेशा) का मूल्य संवर्धन व अन्य हस्तशिल्प सामग्री बनाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। फाइबर उत्पादन के लिए भिण्डी के तने का उपयोग करने और विभिन्न उत्पाद बनाने की पहल ग्रामीण समुदायों के लिए नवीन आय सृजन का सशक्त माध्यम हो सकता है।
- खेती के लिए उपयोगी 12 कृषि समाचारों को स्थानीय अखबारों में प्रसारण एवं आकाशवाणी देहरादून से दो भेंटवार्ता प्रस्तुत की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- ऑन फॉर्म ट्रायल के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा फसल अवषेश प्रबंधन हेतु ट्रैक्टर चालित मल्चर का उपयोग, गन्ने में खरपतवार नियंत्रण, आम में हॉपर प्रबंधन, गुणवत्तायुक्त चारे हेतु मक्खन ग्रास का उपयोग, महिलाओं हेतु संघनित पोषक आहार, आम में डाई बैक नियंत्रण हेतु फंफूदी नाशकों का उपयोग, गेहूं में नैनो यूरिया तथा मोटे अनाजों का ग्रामीणों के पोषण में मूल्यांकन जैसे विषयों पर आयोजित किए गए हैं।

सम्मानित जनप्रतिनिधियों द्वारा स्टॉल का भ्रमण

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत उर्द–पंत उर्द 10, सरसों–पी.आर. 21, सरसों में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन, गेहूं की नवीन प्रजातियों से खाद्य सुरक्षा, गेहूं में कीट प्रबंधन, गन्ने में टॉप बोरर नियंत्रण, गन्ने की ट्रेंच ओपनर द्वारा बुवाई, लम्बे हैंड हो का उपयोग, द्विउद्देश्यीय कुक्कुट पालन, पशुओं में अंतः कृमिनाशी के उपयोग पर प्रदर्शन लगाए गए।
- ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत आर.एम.पी.जी. कॉलेज तथा बीएसएम पीजी कॉलेज, हरिद्वार के विद्यार्थियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया। एक्सपीरिएंसियल लर्निंग प्रोग्राम के तहत चमनलाल डिग्री कॉलेज, हरिद्वार के छात्रों को बीज उत्पादन तथा कुक्कुट पालन पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के सहयोग से मार्च 21–23, 2024 को नर्सरी के क्षेत्र में कार्य कर रहे युवाओं को प्रशिक्षित किया गया। केन्द्र द्वारा प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम एवं आई.आई. टी. रुड़की के साथ ड्रोन तकनीक का प्रदर्शन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा आर्या परियोजना, प्राकृतिक खेती, जल शक्ति अभियान, कस्टम हायरिंग तथा नारी आदि परियोजना अंतर्गत कार्य किए गए। रेखीय विभाग द्वारा आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा एवं नारी षक्ति महोत्सव कार्यक्रम ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में प्रतिभाग किया गया।
- माननीय कुलपति जी दिनांक 26 मार्च, 2024 को केन्द्र पर भ्रमण किये। आपने केन्द्र की विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन करने के साथ–साथ केन्द्र की जनपद में लोकप्रियता बढ़ाने हेतु अनेक सलाह दिये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा की अध्यक्षता में केन्द्र की 19वीं वार्षिक वैज्ञानिक सलाह समिति की बैठक दिनांक 24.01.2024 को आहुत हुई। बैठक में माननीय सदस्यों द्वारा वार्षिक कार्य योजना 2024 के लिये विभिन्न विषयों पर आयोजित किये जाने वाले प्रसार कार्यक्रम हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। विशेष रूप से निदेशक प्रसार शिक्षा ने कहा कि नैनीताल पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल है। अतः पर्यटकों को हस्तशिल्प उत्पाद, मोमबत्ती तथा अन्य पर्वतीय उत्पाद के प्रति आकर्षण व इन्हें समय पर उपलब्ध कराकर कृषकों हेतु स्वरोजगार का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।
- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत पोषण वाटिका में मैरो कद्दू, गोल कद्दू, लौकी, खीरा, टमाटर, शिमला मिर्च, बैंगन, हरी मिर्च तथा अचारी मिर्च आदि लगवाये गये हैं। प्रदर्शित क्षेत्र में पोषण स्तर की जांच के करने के लिये महिलाओं का बी.एम. आई. (बॉडी मॉस इन्डेक्स) के आंकड़े हेतु उनका भार एवं लम्बाई मापी गयी।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा नौ प्रशिक्षण आयोजित कर 176 कृषकों को नवीनतम कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी दी गयी। प्राकृतिक खेती कार्यक्रम के अन्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा एक जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

हस्तशिल्प उत्पादों की प्रदर्षनी

- अन्य प्रसार गतिविधियों

के अन्तर्गत– सामुदायिक रेडियो स्टेषन जनवाणी पन्तनगर से "दैनिक जीवन में संतुलित आहार की उपयोगिता" विषय पर कृषकोपयोगी वार्ता प्रसारित की गयी। मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, पंतनगर द्वारा दिनांक 21 फरवरी, 2024 को आयोजित मत्स्य प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनी कार्यक्रम में सहभागिता की गयी। मैडिकैप विश्वविद्यालय, इन्दौर के कृषि स्नातकों द्वारा केन्द्र का शैक्षणिक भ्रमण किया गया। कृषि सम्बन्धी गतिविधियों को 23 प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

- जनपद नैनीताल के उर्वरक विक्रेताओं के लिये सहकारिता विभाग द्वारा प्रायोजित 15 दिवसीय (26.02.2024 से 11.03.2024) ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को रासायनिक उर्वरक प्रयोग तथा इनकी गणना, समन्वित उर्वरक प्रयोग, उर्वरकों के प्रयोग में बरते जाने वाली सावधानियां, हरी खाद की उपयोगिता, पोषक तत्वों के कमी से होने वाले रोगों की पहचान एवं उनका निदान जैसे विषयों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।
- पंतनगर किसान मेले के दौरान आयोजित महिला सशक्तिकरण गोष्ठी में जनपद की प्रगतिशील महिला कृषक सुश्री जैनू मेहरा, ग्राम–निगलाट, जनपद–नैनीताल को कुलपति महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। मेले में ही जिले के प्रगतिशील कृषक श्री हीरा सिंह, ग्राम–भल्यूटी को प्रगतिशील कृषक के रूप में सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु कृषि आधारित विभिन्न विषयों के उन्नीस प्रशिक्षण, रोजगारपरक तीन प्रशिक्षण तथा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु सात प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिनके द्वारा कुल 557 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। दक्षता कौशल विकास कार्यक्रम (आर0के0वी0वाई0, आर0पी0एल0) के अन्तर्गत नर्सरी वर्कर हेतु मार्च 28–30, 2024 तक प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

बेमौसमी सब्जी उत्पादन की तकनीकी जानकारी

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ व मसूर–3.0 है. तथा सरसों, गेंदा, पत्तागोभी, ब्रौकली, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, प्याज, भिंडी, बरसीम, जई प्रत्येक 1 है. क्षेत्रफल में संचालित हो रहे हैं। इसी क्रम में, मधुमक्खी के 10 बक्से प्रदर्शन में लगाये गये है।
- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की उन्नीसवीं बैठक का आयोजन दिनांक 07.02.2024 को डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौ0 विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में मई 2023 से जनवरी 2024 की प्रगति आख्या एवं वर्ष 2024–25 की कार्ययोजना पर गहन चर्चा की गयी। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा, पंतनगर से आये अन्य वैज्ञानिकगण व रेखीय विभाग के अधिकारियों एवं कृषकों द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये, जिन्हें कार्ययोजना में शामिल किया जा रहा है।
- पिथौरागढ़ व चम्पावत के नवनियुक्त पटवरियों का दिनांक 16.03.2024 को केन्द्र पर भ्रमण तथा संग्रहालय, मशरूम इकाई, कीवी पौधशाला, स्वाचालित मौसम इकाई, पॉलीहाउसों जैसे विकसित इकाईयों का भ्रमण किया गया।
- तकनीक के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किए गये। केन्द्र पर संचालित विभिन्न गतिविधियो की जानकारी, कृषि व उद्यान सम्बन्धी समस्यों के समाधान हेतु अनेक किसानों द्वारा भ्रमण किया गया। इस अवधि में एक रेडियो वार्ता कार्यक्रम, दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 08 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग)

- वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 19वीं बैठक दिनांक 09.01.2024 को डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में प्रभारी अधिकारी द्वारा वर्ष 2023 के प्रसार कार्यक्रमों की प्रगति आख्या तथा वर्ष 2024 के कार्ययोजना पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। अध्यक्षीय सम्बोधन में कुलपति महोदय द्वारा मोरिंगा के औशधीय एवं पोषण गुणों के देखते हुए इसका बीज क्रय कर इसके व्यापक प्रचार–प्रसार का निर्देश दिया गया। डॉ. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा ने कहा कि किसानों की आय वृद्धि करने हेतु रणनीति बनाई जाय, जिससे किसानों का पलायन रूकें। बैठक में पंतनगर से आये वरिश्ठ वैज्ञानिकगण भी कृषकोपयोगी अनेक सलाह दिये। कार्यक्रम में रेखीय विभाग के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कृषक सदस्यों द्वारा भाग लिया गया।

कुलपति महोदय द्वारा स्टॉल अवलोकन एवं परिचर्चा

- जंगली जानवरों से सुरक्षा हेतु क्रॉप कैफिटेरिया के चारों ओर सोलर फैंसिंग का प्रदर्शन लगाया गया है। षीतोश्ण फलों में सेब की चार, अखरोट की एक, प्लम की चार, खुबानी की दो तथा कीवी की दो प्रजातियों का रोपण किया गया है। पॉलीहाउस में फूलगोभी (न्यूजी स्नोवाइट), पत्तागोभी (वरूण) एवं ब्रोकली (बेस्टी) की प्रजातियों का प्रदर्शन एवं पॉलीहाउस के बाहर लहसुन (एग्री फाउण्ड पार्वती) उगाई जा रही हैं।
- केन्द्र द्वारा कुल तीन अनुकरणीय परीक्षण, दो प्रथम पंक्ति प्रदर्शन आयोजन के साथ ही उन्नीस प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्राकृतिक खेती के बढ़ते महत्ता को दृश्टिगत रखते हुए इस विषयक तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।
- केन्द्र पर कुक्कुट पालन तथा शैक्षणिक मधुमक्खी पालन इकाई की स्थापना की गई है। ये इकाईयां जनपद के कृषकों हेतु लाभकारी साबित हो रही हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत गन्ने में खरपतवारनाशियों का मूल्यांकन, ग्रीश्मकालीन धान के प्रतिस्थापन के लिए विभिन्न

फसल प्रणालियों का मूल्यांकन सहित 10 परीक्षण संचालित हो रहे हैं।

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत सरसों (पंत पीली सरसों 01 व पंत श्वेता), गेंहूँ के प्रदर्शन संचालित हो रहे हैं।
- निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा की अध्यक्षता में केन्द्र की वैज्ञानिक सलाह समिति की बैठक दिनांक 20.01.2024 को आहुत हुई। बैठक में माननीय सदस्यों द्वारा वार्षिक कार्य योजना 2024 के लिये विभिन्न विषयों पर आयोजित किये जाने वाले प्रसार कार्यक्रम हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। प्रभारी अधिकारी द्वारा प्रसार कार्यक्रमों की प्रगति आख्या एवं कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण किया गया। कार्यक्रम में पंतनगर से आये अन्य वैज्ञानिकगण भी अपने विषय से सम्बन्धित सुझाव दिये।

भा.कृ.अ.प. स्थापना दिवस पर उत्कृष्ठ केन्द्र का पुरस्कार

- केन्द्र द्वारा कृषकों, ग्रामीण युवकों हेतु तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गये। तोरिया प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन कर कृषकों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं को प्रदर्शित तकनीक के बारे में विस्तार से चर्चा एवं तकनीक हस्तांतरण के बारे में जानकारी दी गयी।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर पॉलीहाउस की स्थापना, बगीचे का प्रबन्धन जैसे कार्यक्रम संचालित हैं। प्रक्षेत्र की गतिविधियों के प्रभावी संचालन तथा क्रियान्वयन हेतु डा0 जयंत सिंह, मुख्य महाप्रबन्धक, विश्वविद्यालय फार्म द्वारा भ्रमण किया गया एवं अनेक उपयोगी सलाह दिया गया।
- विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत भा.कृ.अ.प. स्थापना दिवस, रावे के छात्रों का भ्रमण, मत्स्य पालन जागरूकता शिविर पर प्रदर्शनी, पंतनगर में प्रतिभाग सहित समाचार पत्रों में कृषकोपयोगी समाचार, टेलीविजन शो जैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये।

गृह विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- रेशम कीट पालन तथा रेशम अपशिष्ट से नवाचारी उत्पादों व हस्तशिल्प से संबंधित कौशल प्रशिक्षण आयोजित किया गया। किसानों को रेशम के ककून से नए उत्पाद व हस्तशिल्प जैसे माला, ज्वैलरी, मोमेंटो, राखी, कार्ड आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। समापन समारोह में डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति ने कहा कि रेशम कीट पालन किसानों के आय वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों से इस विधा को अपनाकर स्वरोजगार का सलाह दिया।

रेशम ककून से निर्मित विभिन्न उत्पादों का प्रदर्शन

- वैज्ञानिकों द्वारा महिलाओं को उत्तराखण्ड सरकार की योजनाएं, हर्बल गुलाल, मोटे अनाजों के मूल्यवर्धित उत्पाद, चौलाई और परिस्कृत गेहूँ के आटे का उपयोग, छोटे समूहों में मोटे अनाज आधारित लघु उद्यम जैसे अनेक विषयों पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये।

TREAT (Translating Research for Eco-Agriculture Transformation) यूनिट

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु TREAT यूनिट स्थापित की गयी है। यह यूनिट पर्यावरण अनुकूल कृषि मॉडल इकाई का आदर्श नमूना है। इसके प्रक्षेत्र पर प्याज की पौध नर्सरी, टमाटर, मिर्च, बैंगन, कद्दूवर्गीय सब्जियों की पौध तथा ब्रोकली, बन्दगोभी, फूलगोभी, गाजर, मूली, मटर, टमाटर, धनिया, पालक, मैथी, हाथीकान राई, भिण्डी इत्यादि के प्रदर्शन आयोजित किये जा रहे हैं। मृदा सुधार हेतु जैविक खेती के अन्तर्गत दलहनी फसलें चना, लोबिया इत्यादि के प्रदर्शन लगाये गये हैं। इस इकाई में उपलब्ध मानव संसाधनों के सदुपयोग से परिसर वासियों व आगन्तुकों को ताजी व रसायन मुक्त सब्जियाँ तथा सब्जियों की पौध उपलब्ध कराई जा रही है। आगन्तुकों को यह इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल चार प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय संरक्षित सब्जी उत्पादन, व्यावसायिक मशरूम उत्पादन, कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रान्ति का उपयोग तथा पौधशाला प्रबन्धन सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इन कार्यक्रमों में सब्जी उत्पादक, सब्जी के फार्म स्कूल संचालक, मशरूम उत्पादक, नर्सरी पालक एवं विभागीय अधिकारी, उद्यान विभाग, कृषि विभाग, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 79 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

पौधशाला प्रबन्धन की जानकारी लेते प्रशिक्षणार्थी

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल अट्ठारह प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 636 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय पशुपालन प्रबन्धन, कृषि विविधीकरण, मिलेट्स पुनरोद्धार, आई.पी.एम. एवं कृषि की उन्नत तकनीक इत्यादि से सम्बन्धित थे। इसके अतिरिक्त पन्द्रह भ्रमण कार्यक्रम भी आयोजित किये गये, जिसमें 750 आगन्तुकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) की गतिविधियाँ

भ्रमण पर आये 621 कृषकों/आगन्तुकों को **एकल खिड़की वितरण प्रणाली** के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 35,415.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 69,939.00 मूल्य के विभिन्न सब्जियों तथा धान के बीज उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 एवं 05944–235580 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान प्रभारी अधिकारी, एटिक एवं हैल्पलाईन पर उपस्थित वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

सफलता की कहानी : जीरो से हीरो बनने का सफर

श्री जीवन सिंह बिष्ट, ग्राम–दीनी तल्ली तोक दड़माने, विकास खण्ड–धारी, जनपद–नैनीताल के रहने वाले 40 वर्षीय कृषक हैं और आपके खेती का रकबा लगभग 0.20 हैक्टेयर (10 नाली) है। समुद्र तल से लगभग 2000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित आपके गांव की कृषि पूर्णतया वर्षा आधारित है। श्री बिष्ट अपनी पुश्तैनी जमीन पर परम्परागत खेती जैसे धान, गेहूं, मंडुवा आदि की खेती कर अपना और परिवार का भरण–पोषण करते थे। यद्यपि इस परम्परागत खेती से आप बिलकुल खुश नहीं थे और वैज्ञानिक विधि से खेती करना चाहते थे। आप प्रायः सोशल मीडिया, अखबार इत्यादि से उन्नत बागवानी, सब्जी उत्पादन, बद्री गाय के महत्व के बारे में सुना करते थे। इसी क्रम में आप विकास खण्ड स्तरीय कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारियों से मुलाकात हुई और आपने उनसे अपनी उन्नत कृषि सम्बन्धी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए विभागीय प्रदर्शन संचालित करने का अनुरोध किया। विभागीय सहयोग से सर्वप्रथम आपने कीवी, सेब, आड़ू, प्लम, खुबानी जैसे फल पौध अपने बगीचे में लगाये। बगीचे में ही सह फसल के रूप में सब्जी मटर, लहसुन, आलू, चना जैसे फसलों की भी खेती प्रारम्भ किये। समय बीतता रहा और आपकी कृषि में प्रगाढ़ता बढ़ती गयी। कृषि कार्यों में दक्षता बढ़ाने हेतु आपको प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। विभाग ने पुनः हाथ बढ़ाते हुए प्रशिक्षण हेतु समेटी, पंतनगर में नामांकित किया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए समेटी पंतनगर में सब्जी उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मौन पालन जैसे प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी कार्यकुशलता बढ़ायी। विशेषकर आप बताते है कि पंतनगर में प्रशिक्षण के दौरान उत्तराखण्ड के भिन्न–भिन्न जनपदों से आये कृषकों से विचार–विमर्श, कृषि कार्य करने की विधियों के बारे में विस्तार से चर्चा होती है, जो इनके लिए अति लाभकारी साबित हुआ। वर्तमान में आप बागवानी, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, बद्री गाय, भैंस, मौन पालन जैसे कृषि के घटकों से कुल शुद्ध लाभ लगभग ₹ 50 हजार वार्षिक प्राप्त करते हैं, जो आगामी दो वर्षों में एक लाख से ऊपर होगी ऐसा आप बताते हैं। श्री जीवन सिंह जी समेटी, पंतनगर से सीखे विधाओं को अपने साथी किसानों से साझा करते हुए उन्हें कृषि की आधुनिक तकनीकों को इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। आप युवाओं को शहरों की ओर पलायन न कर अपने गांव में उन्नत कृषि द्वारा स्वरोजगार की राह पर चलने की सलाह देते हैं। पूर्व में जहाँ परम्परागत खेती से आपकी वार्षिक आय बमुश्किल ₹ 10–15 हजार होती थी, अब कृषि के विभिन्न उद्यमों से लगभग ₹ 50 हजार शुद्ध लाभ होता है। अन्त में कहा जा सकता है कि ये कहानी है श्री बिष्ट की ''जीरो से हीरो'' बनने की।

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अधिकांष कृषक आज भी पारम्परिक रूप से खेती करते हैं और वे ज्यादातर आधुनिक कृषि के नवीनतम आयामों से अछूते हैं। इसका कारण कृषकों की छोटी व बिखरी जोत का होना, सिंचाई का अभाव, अन्य संसाधनों की सीमित मात्रा में उपलब्धता एवं विकसित कृषि तकनीक का समुचित हस्तान्तरण न होना है। कृषकों तक उन्नत कृषि तकनीकी पहुँचाने में विभिन्न रेखीय विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं का अहम योगदान है। कृषकों को उनके क्षेत्र व परिस्थितियों के अनुरूप कम लागत की तकनीक उपलब्ध होने की स्थिति में वे उसका प्रयोग कर अपनी पैदावार में बढोत्तरी व अन्ततः अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं। सर्व विदित है कि पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे–छोटे सीढ़ीनुमा बिखरे खेत, वर्षा आधारित कृषि, उन्नत कृषि निवेशों का न्यूनतम प्रयोग इत्यादि कुछ ऐसे कारक हैं, जो प्रायः उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस स्थिति से निपटने हेतु वैज्ञानिक, अधिकारी और प्रसार कार्यकर्ताओं को मिलकर समग्र प्रयास करना होगा। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों के आयोजन के साथ–साथ विभिन्न प्रसार गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है, जो कृषकों हेतु काफी लाभकारी साबित हो रहा है। भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम यथा मोटे अनाजों एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करना, दलहनों एवं तिलहनी फसलों पर क्लस्टर प्रदर्शन जैसे विषयों को भी इन केन्द्रों के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों, रेखीय विभागों के अधिकारियों व प्रसार कार्यकर्ताओं एवं अन्य हितधारकों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए सम्पादक डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक द्वारा किये गये अथक प्रयास हेतु मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

(डा0 जितेन्द्र क्वात्रा)
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक देश में खाद्यान्न उत्पादन में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है, जिसमें किसानों, नीति नियंताओं व कृषि वैज्ञानिकों का अहम योगदान रहा है। किन्तु खेती में यह तरक्की सिंचित क्षेत्रों में एवं बड़े कृषकों तक अधिक रही है। देश के अधिकांश सीमांत व लघु कृषक आज भी इस विकास से अछूते हैं, जिसके अनेक कारण जैसे कृषकों में तकनीकी जानकारी व जागरूकता का अभाव, परम्परागत खेती, महंगे कृषि निवेश, समुचित बाजार व्यवस्था का अभाव आदि प्रमुख हैं। इसके विपरीत अनेक ऐसे भी कृषक है जो आधुनिक कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अच्छी आय अर्जित करने के साथ–साथ अन्य कृषकों हेतु प्रेरणा स्रोत बनकर उभर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता इस बात की है कि कृषकों एवं बेरोजगार युवाओं को अधिकाधिक संख्या में कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों हेतु प्रेरित किया जाये। इस कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक व रेखीय विभागों के प्रसार कर्मी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ''पंत प्रसार संदेश'' का वर्तमान अंक आपके हाथों में है जिसमें विभिन्न प्रसार गतिविधियों के साथ–साथ आगामी त्रैमास में किये जाने वाले महत्वपूर्ण कृषि कार्यों की जानकारी भी दी गयी है। इस पत्रिका को तैयार करने में डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा दिये गये मार्गदर्शन एवं परामर्श हेतु उनका आभार व्यक्त करता हूँ। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों तथा मुख्यालय के वैज्ञानिकों के सहयोग हेतु भी मैं आभारी हूँ। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अन्तिम पेज पर अंकित फोन नं. अथवा ई–मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

धन्यवाद।

(बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई-मेल : dirextedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944-234810, 235580, किसान कॉल सेन्टरः 1800-180-1551
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)